दूध का कर्ज़

वीणा शिवपुरी

प्यारे बेटे मानव,

खुश रहो।

मैं तुझे लम्बी उम्र का आशीर्वाद नहीं दूंगी। उम्र जितनी भी हो, अच्छे कामों में लगे। ताकि मन को शांति, सुख और खुशी मिले।

आज मेरे लिए बड़ी खुशी का दिन है। मेरा बेटा जवान हो कर ब्याहने गया है। कल तू अपनी दुल्हन लेकर वापिस आएगा। आज यहां खूब गाना-बजाना हो रहा है। गांव की तेरी बहनें दूल्हा-दुल्हन बन कर नाटक कर रही हैं।

अभी-अभी दूल्हा बनी कमली सिर पर साफ़ा बांधे लाठी लेकर घर में घुसी। दुल्हन बनी किसनी ने खाने की थाली परोसी। खाना ठंडा था। दूल्हे ने थाली को ठोकर मार दी। और डंडा लेकर दुल्हन को मारने लगा। दुल्हन घुटनों में मुंह छिपा कर रोने लगी। गांव की सारी औरतें खूब हंस रही हैं।

शादी-ब्याह में ऐसे नाटक घर-घर होते हैं। औरतें इसमें कुछ भी बुरा नहीं देखतीं। उनकी अपनी जिंदगी में भी यही रोज़ होता है। कभी पति मारता है। कभी सास खाने को नहीं देती। कभी ससुर डांटता है। मेरे अपने जीवन में भी यही सब कुछ होता था। तू तो मेरी जिंदगी के पच्चीस

सालों का गवाह है। चाहे छोटा भले ही हो, हर जुल्म तेरी आंखों के सामने हुआ। तू डरा हुआ कोठरी के कोने में दुबक जाता था। जब तेरे बापू बात-बेबात पर डंडा उठा लेते थे। कितनी बार गायों के औसारे में तूने मुझे दादी से छुपा कर रोटी खिलाई थी। कितनी बार मेरी गोदी में छुप कर मेरे साथ रोया है।

तेरी दादी को घमंड था कि उनका बेटा तो 'सरवन कुमार' है। उनके कहने पर वो अपनी दुल्हन की जान भी ले सकता है। बेटा मानव, मुझे नहीं चाहिए श्रवण कुमार। हम सब इंसान हैं, जिसमें कुछ गुण हैं, कुछ दोष। मैं तो चाहती हूं कि तू इंसान ही रहे और अपनी दुल्हन को भी इंसान समझे। बस, न तो उसे देवी बना कर पूज, न उसे पैरों की धूल समझ। पत्नी तो जीवन की बराबर की साथी है। जब तू कमज़ोर पड़े तो वह संभाल ले। जब उसे ज़रूरत हो तब तू उसका सहारा बने।

तेरी दादी को मैं दोष नहीं देती। उनका सोचना था कि बेटा अगर दुल्हन का मीत हो गया तो उनका मान नहीं रहेगा। औरतों का मान किसी की पत्नी, किसी की मां बन कर मिलता आया है। इसीलिए वो उस पति और बेटे को मुट्ठी में बांध कर रखना चाहती हैं। चाहे लाड़ मनुहार या आंसुओं से या अपने दूध की कीमत मांग कर।

यह बात मुझे भी तब समझ में आई जब तेरे पिता के गुजरने पर मैं अपने पैरों पर खड़ी हुई। तुझे तो मालूम ही है कि मैंने क्या-क्या दुख सहे। कितनी मुश्किल से पढ़ा-लिखा, अध्यापिका बनी। फिर मैंने देखा, मेरा अपना मान होने लगा। लोग मुझे इज्ज़त देते थे। मेरी सलाह मांगते थे।

आज मैं किसी की बेटी या पत्नी के नाम से नहीं जानी जाती। आज मैं करमां बहन जी हूं। मैं यह नहीं कहती कि किसी मर्द के नाम से पुकारे जाने में कोई अपमान है। कोई मुझे मानव की मां कहे तो अच्छा लगता है। वैसे ही जब तुझे करमा बहन जी का बेटा कहें तो तुझे भी गर्व होना चाहिए। तभी रिश्ते बराबरी के कहला सकते हैं।

मैंने बचपन से तुझे गरीब-अमीर, शिक्षित-अशिक्षित, औरत-मर्द को बराबर मान देना सिखाया है। मुझे उम्मीद है, मेरी शिक्षा बेकार नहीं जाएगी।

कल जब तू दुल्हन को लेकर दरवाजे पर आएगा, मैं तुम दोनों की आरती उतारूंगी। तुम्हें खुश रहने का आशीर्वाद दूंगी। तू मुझसे दूध की कीमत पूछेगा। न मैं सोने के कंगन मांगूंगी, न दुल्हन के गले का हार। बेटा, मैं तो तुझे अपना कर्ज़दार मानती नहीं। अगर अपनी मां को कुछ देना ही चाहता है तो एक वचन दे। तेरी दुल्हन के साथ वो सब न हो जो तेरी मां के साथ हुआ। अत्याचार की यह जंज़ीर कभी तो टूटनी चाहिए। एक भरपूर सुखी पत्नी और मां ही ममताभरी सास बनेगी। एक इंसान के रूप में एक दूसरे की बढ़ोतरी में सहयोगी बनो। यही मेरी इच्छा है और यही मेरा आशीर्वाद। बहुत से प्यार के साथ

तेरी मां

कर्मवती